भगवान सबसे निकट है।
भगवान सबसे दूर है।

अब तक हम ये देख चूके है कि भगवान सब जगह समान रूप से व्याप्त रहते है। सब के हृदय में भी वही भगवान का निवास है। अगर ये बात कोई मान ले तो और हर समय रियलाइज करे तो भगवत् प्राप्ती फ्री में हो जाएगी। हर वक्त जहा भी नजर जाए वहा भगवान है ये दिमाग में बैठ जाए तो कुछ साधना, आरती आदि करने की जरूरत ही नही है। ऐसा नही है कि आप मानेंगे तो वहाँ भगवान है, आप माने चाहे ना माने भगवान तो सब जगह व्याप्त है ही। जैसे किसी पागल व्यक्ति अपने ही माँ, बाप आदि को नही पहेचानता है उसी प्रकार हम संसारी वस्तुओं एवं संसारी व्यक्तिओं के पीछे पागल होने के कारण हम सर्वव्यापक भगवान को नही पहेचान रहे है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान हमारे इतने नजदीक है कि जिस प्रकार हमारा शरीर आत्मा के कारण चेतन रहता है उसी प्रकार जीव स्वयं भगवान के चैतन्य से चेतन है। मतलब जीव या आत्मा भगवान का शरीर है और भगवान हमारे आत्मा की आत्मा है। इसी कारण भगवान सब आत्माओं की आत्मा यानी परमात्मा है।

जैसे हमारे मन, इंद्रिय, शरीर आत्मा के सुख के लिए सेवा करते है, वैसे ही भगवान की सेवा करना ये आत्मा का सहज स्वभाव है। ईसलिए निष्काम प्रेम प्राप्त कर भगवान के सुख के लिए भगवान की सेवा करना ही जीव का परम चरम लक्ष्य है। आत्मा का चैतन्य भगवान के चैतन्य से है इसलिए भगवान को चेतन का चेतन

कहते है। जीव भगवान के भीतर रहता है। जर सी भी दूरी नही है। जीव सूक्ष्म है तो जीव में व्याप्त भगवान सूक्ष्मतर है। भगवान सबसे छोटे से छोटा है। भगवान सूक्ष्म इंद्रिय, मन, बुद्धी में व्याप्त होकर सब मानसिक कर्म नोट करता है एवं उसके अनुसार फल देता है। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है लेकिन फल भोगने में परतंत्र है। कर्मों का फल भोगना ही पडता है। ईसलिए कर्म करते समय सावधान रहे। गलत कर्म से बचें प्लस भगवान में मन लगाने का अभ्यास करें। तो इस प्रकार भगवान सबसे निकट है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

लेकिन जीव अनादि काल से शाश्वत सुख पाने के लिए प्रयत्नशील है फिर भी अब तक असफल रहने से वह चौरासी लाख योनियों में जन्म मृत्यु एवं अन्य दुःखों को सहता हुआ चक्कर काट रहा है। मतलब ये कि जीव अनंत काल से भगवान (आनंद) को हर क्रिया में ढूंढ रहा है यानी भगवान की ओर चल रहा है लेकिन अभी तक भगवान के निवासस्थान अनंत जन्मों में भी नहीं पहुंचा है। इसका कारण ये है कि भगवान निकटतम होने के बावजूद हम लोग गलत रास्ते पर होने से भगवान के आसपास भी नही पहुँच सके है। इसके अलावा भगवान विरोधी धर्मों का अधिष्ठान होने से भी हमारी बुद्धी में नही आ सकता।

हमने देखा कि भगवान सबसे छोटे से छोटा है। इसके साथ भगवान सबसे बड़े से बड़ा भी है। भगवान सबसे बड़े ब्रह्मांड से बड़ा है। क्योंकि सभी ब्रम्हांडों को विश्व के अंतिम दिन महाप्रलय में नष्ट कर भगवान के महोदर में लीन किया जाता है।

इसके अलावा भगवान कानों के बिना सुनता है, वह बिना आंखों के देखता है, बिना हाथों के पकडता है, बिना मुख के खाता है, बिना नाक के सुँघता है, बिना पैरों के चलता है, बिना त्वचा के छूता है, बिना मन के सोचता है इत्यादि। इतना ही नही भगवान एक इंद्रिय के भी सारे इंद्रियों के काम करता है। जैसे भगवान आंख से देखता है, सुनता है, सुँघता है, खाता है, चलता है, पकडता है, छूता है, सोचता है इत्यादि। ये सब हमारी बुद्धी नही समझ सकती इसलिए हम भगवान को प्राप्त करने में असफल रहे है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान को पाने के लिए अनादि काल से प्रयत्नशील होने पर भी हम भगवान तक नही पहुँच सके है, इसलिए भगवान दूर से भी दूर है।

इस प्रकार

भगवान सबसे निकट है।
भगवान सबसे दूर है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132